बी. ए. हिन्दी प्रतिष्ठा / खण्ड-द्वितीय / अध्ययन सामग्री

डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी।

दिनांक :- 08.04.2024

पत्र : चतुर्थ / छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

## अज्ञेय के काव्य व्यक्त सौंदर्यानुभूति या प्रकृति चित्रण

अज्ञेय ने काव्य में सौंदर्य और उसकी अनुभूति पर विशेष बल दिया है। उन्होंने छायावाद, प्रगतिवाद और व्यक्तिवादी गीति-काव्यधारा की नीरसता को दूर करने के लिए काव्य सौंदर्यानुभूति के प्रयोग को महत्व दिया। वास्तव में जितने वे सफल और सशक्त कथाकार हैं, उतने वे सफल कवि नहीं हैं, फिर भी काव्य के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान और प्रयोग को भुलाया नहीं जा सकता है। उनकी कविता एक व्यक्तिनिष्ठ कवि की कविता है। जहाँ नारी सौन्दर्य के प्रति तीव्र आकर्षण एक ओर एक समर्पित पुरुष मिलेगा, हरी घास पर थोड़ी देर बैठकर शांति का अनुभव करता हुआ व्यक्ति मिलेगा।

कवि ने काव्य में सौन्दर्यानुभूति के लिए कई प्रयोग किए हैं। उनकी सौन्दर्यानुभूति सूक्ष्म और कलात्मक है। प्रेम भावों को व्यक्त करने के क्रम में कवि का सौन्दर्यबोध स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है। प्रकृति-निरूपण में तो उनके सौन्दर्य-बोध को देखा जा सकता है। कविता 'ऋतुराज' इसका जीवन्त प्रमाण है। स्वतंत्र रूप से अज्ञेय ने नारी सौन्दर्य की छवियों को अपने काव्य में प्रयोगात्मक ढंग से कुशलता के साथ चित्रित किया है।

उनका प्रेम सौन्दर्य की भावना करने का तरीका अनुपम ~~एवं~~ है। उनका प्रेम का आलंबन रूप सागर है, किन्तु वे 'कलगी बाजरे की' शीर्षक कविता में 'ये उपमान मैले हो गये' के माध्यम से नये अंदाज में अपने सौंदर्य- भाव को ~~प्रक~~ प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा रचित 'नख- शिख' कविता उनकी सौन्दर्यानुभूति को नये उपमानों द्वारा निरूपित करती है। उनकी सौन्दर्यानुभूति का सीधा संबंध प्रकृति से जुड़ा हुआ है। वे प्रकृति को खुद में महसूस करते हैं। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण 'अरी ओ करुणा प्रभामय', ~~और~~ 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी' जैसी कृति में इनकी ~~नवीय~~ नवीन सौंदर्यानुभूति और उसकी अभिव्यंजना को देखा जा सकता है। ~~कोअपने~~ उनके काव्य की प्रेरक शक्ति प्रकृति- ही है।